Snehal Sindhu

Monthly Bulletin for Divine Message of Spiritual Relationship, Friendship and Love
Vol. 011 Issue 12 DECEMBER 2025 Pages 14 A.S. Rs 100

P.P. Premswaroopswamiji's 81st Pragatya Din celebration

P. Harakhchandbhai's 86th Pragatya Din celebration

स्वामिश्रीजी

सत्संग समाचार

✻ सन् २०२५ की अंतिम भजन संध्या रविवार, दि. ७ दिसंबर कल्याण में पवई के संतभाईयों, संतबहनों तथा कईं हरिभक्तों की हाजरी में आनंदोत्सव के साथ मनाई गई।

Bhajan Sandhya at Kalyan

प.पू. भरतभाई ने आशीष देते हुए कहा कि गुरुहरि काकाजी बहुत श्रीमंत थे, फिर भी हमारे साथ सामान्य से सामान्य बनकर रहे। उनके पास जो शक्ति थी, जो प्रभाव था वो अलग था। उसका अनुभव हमने खुद किया है। हमें तीन बातें जीवन में दृढ करनी है। (१) कभी भी कोई अपेक्षा मत रखो – काकाजी को कभी भी कोई अपेक्षा नहीं थी। सबसे सुखी कौन है? तो जिसको कोई Expectation यानि अपेक्षा नहीं है वही मनुष्य सबसे सुखी है। एकबार काकाजी के पास मैंने सेवा का List बनाकर दिया। उन्होंने कहा कि आपने काम बहुत अच्छा किया है, लेकिन मैं किसीको किसी भी बात के लिये आग्रह नहीं करता। उनको मन में हो तो वे खुद जरूर करें। आध्यात्मिकता में काकाजीने एक ही वाक्य में बता दिया कि आपको Highest level तक पहुँचना है तो उसके लिये खुद तैयार होना पडेगा। भगवान सहाय करेंगे, मार्गदर्शन देंगे, लेकिन करना हमें ही है। वैसी जाग्रतता हमें लानी है। छोटी छोटी बातों में हमारा Mood

Bhajan Sandhya at Kalyan

खराब हो जाता है। हम नकारात्मक बहुत सोचते है। भगवानने हमें जैसे जहाँ रखा है वो हमारे लिये अनुकूल ही है। हमेशा काकाजीने निरपेक्षभाव ही रखा है। गुणातीतानंदस्वामीने कहा है कि दो जन सबसे सुखी है – जिसको कुछ चाहिए ही नहीं और जिसको केवल भगवान चाहिए। **(२)** हरेक क्रिया में धुन का सहारा ले – नया साल आ रहा है तो हमें संकल्प करना है कि जो भी कार्य करें वह स्वामिनारायण... स्वामिनारायण... धुन करके ही करें। कभी भी कोई दु:ख आता है तो हमें डरना नहीं है। हरेक प्रश्न का समाधान है। वह हमें दु:खी करने नहीं लेकिन हमारी सहनशक्ति के अनुरुप भगवान हमें तकलीफ देते है। अगर आपमें वो ताकात नहीं होती तो भगवान आपको ऐसी तकलीफ देते ही नहीं। यह बात जरुर मानना। काकाजी का जीवनचरित्र पढेंगे तो पता चलेगा उन्होंने कैसे जीवन जीया। उनके वस्त्र, उनका चलना भी Royal था। उनकी मस्ती, केफ अनोखा था। **(३)** दूसरों को सहाय करें – काकाजी हमें सीखाते थे कि हमेशा दूसरों को मदद करो। ऐसे हमें हमारे गुरु का सच्चा शिष्य बनना है। हम हमेशा जाग्रत रहकर बताये हुए मार्ग पर चलना है वही प्रार्थना।

Bhajan Sandhya at Kalyan

P. Ashwinbhai and P. Kusumtai's Pragatya Din celebration at Kalyan

उसके बाद प.पू. अश्विनभाई के ७५वें और पू. कुसुमबहन (ताई) के प्रागट्यदिन निमित्त केक कटिंग हुआ।

✻ बुधवार, दि. १० दिसंबर को कर्जत के उकरुल गांव की महिलाओं तथा युवतीओं को योगी डिवाईन सोसायटी तथा सद्भाव फाउन्डेशन की ओर से Hand Embroidery Training, Jewellery Making Course का आयोजन हुआ, जिससे उन्हें सक्षम बनने की और स्वनिर्भर होने की तालीम मिली।

कर्जत के वैजनाथ गांव में योगी विाईन सोसायटी की ओर से अच्छे शिक्षण के लिये जिल्ला परिषद के प्राथमिक केन्द्रशाला में नये स्कूल में शौचालय निर्माण का कार्य किया।

Social Activities at Karjat

गुधवान वाडी (Tribal Area) प्राथमिक स्कूल में नये कपडे देकर साथ ही स्कूल के बच्चों और स्टाफ के लिये Water cooler का भी प्रदान किया।

✻ सोमवार, दि १५ दिसंबर को गुणातीत ज्योत से पू. मायाबहन और अन्य संतबहनों ‘अक्षरधाम’ स्वामिनारायण मंदिर पधारे थे। उन्होंने मंदिर के नूतनीकरण के बारे में जानकारी प्राप्त करके सभीको आशीर्वाद भी दिये।

P. Mayaben & other Saint Sisters at "Akshardham" Temple

✻ शनिवार, दि. २० दिसंबर को कर्जत के विधविध गांव में योगी डिवाईन सोसायटी, सद्भाव फाउन्डेशन और रोटरी कलब की ओर से Jay Ambe Bhavani Madhyamik Vidya Mandir, Bhisegaon में पांच अलग अलग स्कूलों में १०० छात्राओं को सायकल का वितरण किया गया। G.D. Somani School की ओर से ७ सायकल भी इसमें समाविष्ट थी। वे छात्राओं (1) Jay Ambe Bhavani Madhyamik Vidya Mandir (Bhisegaon) (2) Raigad Zilla Parishad School (Baliware) (3) Raigad Zilla Parishad School (Bhakaricha Pada) (4) Neral School (5) Kharwai School के शाला में से आये थे। पूरा कार्यक्रम कर्जत के Bhisegaon गांव में आयोजित किया गया था।

Social Activities at Karjat

✻ रविवार, दि. २१ दिसंबर को वेदकुमारीजी आणंद से खास अक्षरधाम स्वामिनारायण मंदिर आई थी। उन्होंने Faridah Madam (Owner of Chrysaellect) और श्री. निधि के साथ मंदिर नूतनीकरण के कार्य में बच्चों की Pre-School के लिये खास विचार-विमर्श किया।

P.B. Vedkumariji and Faridah Madam at "Akshardham" Temple, Powai

✻ गुरुवार, दि. २५ दिसंबर को प.पू. हरखचंदभाई का ८६वाँ तथा प.पू. हरिभाई साहेबजी का प्रागट्यदिन, प.पू. दिनकरभाई, पू. किशोरभाई मास्टर्स और पू. अेन्जीबहन का स्वागत समारोह 'अक्षरधाम' स्वामिनारायण मंदिर, पवई में भक्तिभाव से मनाया गया।

पू. किशोरभाई मास्टर्स ने कहा कि उम्र के हिसाब से शरीर थकता जरुर है, लेकिन सत्पुरुष हमारे साथ होते है तो वो थकान महसूस नहीं होती। वैसे मैंने दिनकरभाई के साथ Sydney, New Zealand तथा Perth में विचरण किया, करीब १५ घंटे की यात्रा करी, लेकिन दिनकरभाई की सेहत अच्छी रही। वहाँ एक शिबिर की थी जिसमें तीन मुद्दे पर बातचीत की थी - **(१) मैत्रीभाव (२) निर्दोषबुद्धि (३) स्वरुपनिष्ठा।** ऐसा तय किया था कि वे बारी-बारी हरिभक्तों के घर कुछ दिन रुकेंगे। वैसे हरिभक्तों के ज्यादा करीब आने का मौका मिला। वे हरपल मूर्ति में लीन रहते है। वैसे ऑस्ट्रेलिया जैसे स्थान में भी कुटुंबभाव का अच्छा विकास देखने को मिला। दिनकरभाई जहाँ भी जाते उनके आकर्षण से हर किसीको उनकी तरह खींचते है। गुरुजी और हरिभक्तों लंडन आये तब जहाँ-जहाँ काकाजी गये थे वो सारी जगह पर पधरामणी की थी और वहाँ वे दंडवत करते थे। उनकी भक्ति अद्भुत है। आज हम हरखचंदभाई का प्रागट्यदिन मना रहे है। वैसे वे प्रेम की मूर्ति है। तो हम सभी के साथ कुटुंबभाव का संबंध दृढ करें वही प्रार्थना।

P. Harakhchandbhai's 86th Pragatya Din celebration at "Akshardham" Temple, Powai

पू. माधुरीबहन ने कहा कि बडे पुरुषों की हम पर बहुत कृपा है कि हर पल वे हमें मार्गदर्शन देते है। हमारे लिये भजन भी वही करते है। हरखचंदभाई यहाँ पवई जंगल था तब भी रहते थे। उत्साहपूर्वक सेवा करते है। वे उनका रुम इतना साफ-सूथरा रखते है कि स्वामीजी भी आते तो उनके रुम में आराम करते थे। सबसे के प्रति उनका भाव बहुत है। गुरुहरि काकाजी थे तब भी वे रसोई में जाते तो कोई सेवा दिखती तो तुरंत कर लेते थे। हरखचंदभाई को कोई भी चीज Quality वाली चाहिए। किसी की सेहत अच्छी नहीं होती तो उनके लिये दिल से सेवा करते है। राजुभाई भट्ट की तो सेवा की ही, लेकिन आज पवई के सभी संतभाईयों से लेकर अश्विनभाई तक सभी की सेवा कर रहे है। उनको कोई भी काम कहेंगे तो वे तुरंत कर देते है। तो उनके जैसी महिमा का भाव हमारे अंदर आये वही प्रार्थना।

प.पू. वशीभाई ने कहा कि हमारा प्यार केवल गरज के लिये होता है, लेकिन हरखचंदभाईने गुरुहरि काकाजी के साथ दिल से प्यार किया। वो हरखचंदभाईने गुरुहरि काकाजी से किया। हरखचंदभाई का जन्म १९३९ में हुआ। काकाजी की भक्ति उन्होंने की उसकी कुछ झलक हम देखेंगे। **(१)** सन् १९७१ में योगीबापा स्वधाम पधारे। तब काकाजी रेशमी कुर्ता पहनते थे। उस समय जापान में बोसकी रेशमी कपडा शुरु हुआ था। वो ढूँढकर उन्होंने काकाजी के लिये खास बनवाया। **(२)** काकाजी को जाबुन बहुत पसंद थे। वो खास फलवाले के पास चुनकर काकाजी के लिये ज्युस बनाकर देते थे। **(३)** काकाजी की मोजडी तक वे स्वयं लाते थे। काकाजी की स्थिति के मुताबिक उन्हें क्या देना चाहिए वो उनको बराबर पता था। हमारे मंदिर में नीचे के सभागृह में शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज की सोने की मूर्ति रखी है। पहले बाजु में रसोईघर था तो उसका धुआ आने की वजह से वो मूर्तियाँ काली पड जाती थी, तो वो उन्होंने देखा और घनश्यामभाई को बोलकर AC लगवाकर काच लगवा दिया। अभी अश्विनभाई की सेहत अच्छी नहीं है, तो ८६ साल की उम्र में भी उनका पूरा ख्याल रखते है। तो हमारे सभी संतभाईयों की सेहत हमेशा अच्छी रहे वही प्रार्थना।

प.पू. भरतभाई ने कहा कि आज Christmas का बडा दिन है। साथ ही आज तुलसी के पौंधे की भी पूजा की जाती है। तुलसी के पौंधे को भी बहुत पवित्र माना जाता है। किशोरभाई मास्टर्स के माताजी के गले में अच्छा नहीं था तो वो बोल नहीं पाते थे। काकाजीने उन्हें २१ दिन तक तुलसी के पत्ते खाने को कहा था। आवाज तो ठीक हुई साथ ही उनको कभी भी कोई बीमारी नहीं आई। आज दिनकरभाई, किशोरभाई मास्टर्स और अेन्जीबहन का भी स्वागत करते है। वैसे तो वो अपने घर में ही आये है तो स्वागत तो केवल निमित्त है। इस उम्र मे भी दिनकरभाई का अखंड विचरण चलता ही रहता है। कोई भी अपेक्षा बिना केवल प्रभु की ओर ही उनकी दृष्टि है। हरिभक्त को जैसे चाहिए वैसे वे खुद को adjust कर लेते है। ब्रह्मरुप होकर परब्रह्म की भक्ति करना वही वो सभीको सीखाते है।

आज हरखचंदभाई का प्रागट्यदिन मना रहे है। उनको हमेशा देह की कोई ना कोई तकलीफ आते ही रहती है। हम भाईयों में सबसे ज्यादा देह की बीमारी उन्होंने सहन की है। वे बहुत खानदान व्यक्ति है। कोई भी चीज हो, वो उसे खुद की नहीं मानते, अपने पास जो भी होता है वो सभी में बाँट देते है। वो हमें सीखाते है कि हर परिस्थिति में प्रभु को कर्ताहर्ता मानकर सेवा करते रहना। उन्होंने राजुभाई भट्ट की इतनी अद्‌भुत सेवा की। उनको पैर में तकलीफ थी तब काकाजीने एक बीमार भक्त की सेवा के लिये जाने की आज्ञा की। वो उन्होंने किया तो उनकी पैर की तकलीफ दूर हो गई। हम में से किसीको देह की छोटी से छोटी तकलीफ भी होती है तो उनको तुरंत पता चल जाता है कि हमको क्या हुआ है और उसका वो बराबर ईलाज भी करते है। तो उनकी सेहत हमेशा अच्छी रहे और उनका जीवन हमारे लिये प्रतीकरुप बने वही प्रार्थना।

प.पू. दिनकरभाई ने कहा कि हरखचंदभाई जितने नीडर है उतने भक्तिभाववाले है। पहले जब यहाँ मंदिर नया नया तैयार हुआ था तब ठाकोरजी को सुबह शणगार की सेवा वो करते थे। वो कोई भी काम करते है तो एकदम Perfect करते है। उनका प्रागट्यदिन २९ दिसंबर को है। उसी दिन हरिभाई साहेबजी का भी प्रागट्यदिन आता है। माणावदर में उन्होंने इतने सारे युवकों को तैयार किया जो आज भगवान के मार्ग में आगे बढ चूके है। वे काकाजी के प्रसंग बताते थे तो साल, समय, दिन सबकुछ इतना अच्छे से बताते थे कि हमारे सामने वो प्रसंग खडा हो जाता है। तो काकाजी और सभी गुणातीत स्वरुपों राजी हो ऐसा हमारा जीवन बने वही प्रार्थना।

उसके बाद प.भ. हेमंतभाई मर्चन्टने हरखचंदभाई के लिये जो प्रार्थना लिखी थी उसका पठन किया।

अंत में पवई की ओर से सभी भाईयोंने हरखचंदभाई को हार पहनाया।

P. Harakhchandbhai's 86th Pragatya Din celebration

✻ शनिवार, दि. २७ दिसंबर को प.पू. प्रेमस्वरुपस्वामीजी का ८१वाँ प्रागट्यदिन दिनकरभाई और पवई के सभी संतभाईयों, विद्यानगर के संतभाईयों, हरिधाम के संतों, निर्मलस्वामीजी और स्थानिक हरिभक्तों तथा राजकीय महानुभावों की हाजरी में भक्तिभाव और उत्साह से झाणभोई(वडोदरा) में मनाया गया।

इस उपलक्ष्य में प्रेमस्वरुपस्वामीजी के जीवन पर आधारीत युवकोंने सुंदर सांस्कृतिक कार्यक्रम भी किया। साथ ही नवदिक्षित युवकों को दीक्षा दी गई।

P.P. Premswaroopswamiji's 81st Pragatya Din celebration at Chhanbhoi (Vadodara)

पवई की ओर से प्रेमस्वरुपस्वामीजी को विशिष्ट हार अर्पण हुए। अंत में प्रेमस्वरुपस्वामीजी के आशीष सभीको प्राप्त हुए।

दि. २८ को सांकरदा मंदिर का ७वाँ पाटोत्सव सभी संतों, पवई से दिनकरभाई और सभी संतभाईयों, विद्यानगर के संतभाईयों की हाजरी में हुआ। साथ ही सांकरदा के संतों के लिये नये निवासस्थान का नूतनीकरण के लिये भी विशिष्ट महापूजा की।

उसी दिन सांकरदा के वरिष्ठ संत प.पू. स्नेहलस्वामीजी का प्रागट्यदिन भी मनाया गया।

Poojan for New Saint Niwas at Sankarda

Sankarda Temple Patotsav and P.P. Snehalswamiji's Pragatya Din celebration at Sankarda

* बुधवार, दि. ३१ दिसंबर, २०२५ की साल के अंतिम दिन 'अक्षरधाम' स्वामिनारायण मंदिर, पवई में '२२४वे स्वामिनारायण महामंत्र प्रदान दिन' निमित्त विशिष्ट सभा के साथ Fun Fair का आयोजन करके सभीने आनंदोत्सव किया, जिसमें कई हरिभक्तोंने अलग अलग व्यंजनो Stalls बनाकर सभी को स्वाद का आनंद कराया और उसमें से जो सेवा मिली वह पवई मंदिर के नूतनीकरण के कार्य के लिये भेट के रुप में अर्पण की। नीलकंठवर्णी की मूर्ति के अभीषेक का भी आयोजन किया था। युवक-युवतीओंने बालमंडल के बच्चों के लिये Games का आयोजन करके आनंद करवाया।

Swaminarayan Mantra Pradan Din celebration and New Year welcome sabha at "Akshardham" Temple, Powai

प.पू. वशीभाई ने कहा कि भरतभाईने आधा घंटा धुन की बात की वो मंत्र की शक्ति समझकर और हमें जो मिले वो गुणातीत स्वरुप है ऐसा मानकर करेंगे तो भगवान की शक्ति हमारे अंदर काम करेगी। इसलिये ही श्रीजी महाराजने आज का दिन महामंत्र के रुप में चुना ताकि नये साल की शुरुआत हम धुन से ही करें। हमने २०२५ से क्या सीखा और उस गलती को सुधारकर २०२६ में आगे बढना है। हमें अपने आपको ऐसे तैयार करना है कि आसपास का कोई पदार्थ या परिस्थिति हमें स्पर्श नहीं कर सकें। २०२६ का साल बहुत कुछ नया लेकर आ रहा है, तो हमें बहुत ज्यादा जाग्रत होना है। काकाजी कहते थे कि हरपल हमारा नया साल ही है। फरियाद करना छोड दो। अगर कोई तकलीफ है तो उसका हल करने का रास्ता ढूँढना है।अपने आपको इतना ऊपर लेकर जाओ कि १० भजन तो हमें मुखपाठ होने ही चाहिए। तो हमें देखकर हर कोई बोले कैसे होंगे काकाजी वह सिद्ध कर ले वही प्रार्थना।

प.पू. भरतभाई ने आशीष देते हुए कहा कि काफी समय के बाद आज हमने वापस Fun Fair का आयोजन करके अच्छा आनंद किया। सभी गुणातीत संतों के आशीर्वाद के साथ २०२६ का हम स्वागत कर रहे है। आनेवाले साल में गुरुहरि काकाजी का १०८वाँ प्रागट्योत्सव हम मनानेवाले है। साथ ही शिक्षापत्री द्विशताब्दी महोत्सव भी मनायेंगे। इस नये साल में हमें संकल्प तय करना है। आध्यात्मिकता में अब तक हम जो भी कर रहे थे उससे एक कदम आगे बढना है। **(१)** हररोज आधा घंटा निर्विकल्पभाव से एकाग्र होकर धुन करना ही है। **(२)** शिक्षापत्री का एक श्लोक पढें। **(३)** काकाजी को सुहृदभाव पसंद है तो वैसे हमें जीवन जीना है। हररोज एक ऐसा सत्कर्म करें जिससे कुटुंबभाव बढे। तो हमारे पवई मंदिर का Project २०२६ में ज्यादा आगे बढे वही प्रार्थना।

प.पू. दिनकरभाई ने आशीष देते हुए कहा कि पवई मंदिर में नूतनीकरण का कार्य जो होने जा रहा है उससे हमारा एक Benchmark बन जायेगा। सन् १९७८ में गुरुहरि काकाजी महाराजने बोला था कि पवई में ISRC (International Spiritual Research Centre) तैयार होगा। जब चंद्रभाण शर्माजीने हमें ये

New Year welcome sabha with Fun Fair at "Akshardham" Temple, Powai

जमीन दी थी उस समय इसकी ज्यादा किमत नहीं थी, लेकिन आज इतनी ज्यादा बढ गई है कि उतने में एक घर लेना भी मुश्किल है। चंद्रभाण शर्माजी के मित्र गुलझारीलाल नंदाजी थे। शर्माजीने उनको पवई की इस जमीन के बारे में पूछा। उन्होंने उन्हें काकाजी से बात करने कहा। तो शर्माजीने काकाजी को सब बात की। काकाजीने कहा कि योगीजी महाराज बहुत समर्थ है। तो यज्ञ करवाकर आहुति देंगे तो फायदा होगा। गोंडल से योगीबापा आये। उस समय यहाँ जंगल था। योगीबापाने कहा कि यहाँ आप ऐकर में जमीन बेचना चाहते हो, लेकिन आगे इंच-इंच की भी कीमत होगी। उनका वो आशीर्वाद आज सच हो गया है। तो इस जमीन का बहुत पुण्य है। ऐसे गुणातीत स्वरुपों की गोद में रहेंगे तो ब्रह्मरुप होना सरल हो जायेगा। योगीबापाने गुणातीत ज्ञान का नवनीत दिया है। उसका पहला सूत्र - किसीके अभाव-अवगुण में जाना नहीं है। हम इतना भी करेंगे तो ब्रह्मरुप हो जायेंगे। हमें हमारा स्वभाव बूरा नहीं लगता, तो दूसरों का क्यों लगता है वह सोचना है। तो आज हमें संकल्प करना है कि २०२६ शुरु होने जा रहा है तो कम से कम दो हरिभक्तों के गुण के बारे में सोचे। हररोज करेंगे तो हमारे अंदर ३६५ गुण आ जायेंगे। तो वह हम कर पाये वही प्रार्थना।

उसके बाद सभीने नये साल का स्वागत करते हुए स्वामिनारायण मंत्र की धुन की।

✲ પૅરિસ મંડળના ખૂબ જ નિષ્ઠાવાન અને પાયાના મુક્તરાજ પ.ભ. જયંતીબહેન (જયવંતીબહેન) છગનભાઈ મિસ્ત્રી (ઉંમર-૭૬) રવિવાર, તા. ૭મી ડિસેમ્બરે સવારે ભગવાન સ્વામિનારાયણ અને ગુરૂહરિ કાકાજી મહારાજને સંભારતા અક્ષરધામ સિધાવ્યાં.

જ્યારે કાકાજી પ્રથમવાર પૅરિસ પધાર્યા હતા ત્યારે ખૂબ જ જૂજ હરિભક્તો તેમના સંપર્કમાં આવ્યા હતા. કાકાજીની ઈચ્છાથી પ.ભ. પ્રવીણભાઈ લાડે પૅરિસમાં જે સત્સંગ મંડળનો વિકાસ કર્યો તેમાં છગનભાઈનું કુટુંબ ખૂબ જ આગળ પડતું હતું. જયંતીબહેને તેમને અદ્‌ભુત સાથ આપ્યો હતો. સમગ્ર મંડળના વિકાસમાં તેઓનું યોગદાન ખૂબ જ અમૂલ્ય હતું. હરેક પ્રસંગે સ્વામિનારાયણ મંત્ર અને કાકાજીનું બળ લઈ તેમણે અને તેમનાં પરિવારમાં તેમના દીકરા પ.ભ. પ્રફુલ્લભાઈ-પ.ભ. ભારતીબહેન, બે દીકરીઓ પ.ભ. પન્નાબહેન-પ.ભ. બળવંતરાય, પ.ભ. ધર્મિષ્ઠાબહેન-પ.ભ. ભરતભાઈ સહુ ખૂબ જ સક્રિયતાથી સત્સંગમાં જોડાયા અને તેમને લઈને પૅરિસના સત્સંગમાં ખૂબ જ વિકાસ થયો. શરૂઆતમાં બધાનાં ઘર નાનાં હતાં તેમ છતાં ત્યાં આવતા હરિભક્તોની રાખ-રખાવટમાં તેમણે પ્રવીણભાઈને સારો સાથ આપ્યો. તેના પરિણામે આજે તેમનાં કુટુંબમાં તથા સમગ્ર મંડળમાં આત્મીયતાની સુવાસ મહેંકી રહી છે.

અવારનવાર પ.પૂ. દિનકરભાઈ, પ.પૂ. ભરતભાઈ, પ.પૂ. વશીભાઈ અને અન્ય સંતભાઈઓ, સંતબહેનો પૅરિસ જતા ત્યારે જયંતીબહેને તેમની ખૂબ જ સરસ આગતાસ્વાગતા કરી હતી. આમ તેમણે પાયાનું યોગદાન આપી સહુને અદ્‌ભુત માર્ગદર્શન પૂરું પાડ્યું હતું.

જયંતીબહેન(જયવંતીબહેન) તો અક્ષરધામમાં કાકાજી પાસે જ છે. તો તેમના જેવા નિષ્ઠા, ભજન, સેવા અને સમાગમના અદ્‌ભુત ગુણો સહુ કોઈને પ્રાપ્ત થાય અને સર્વે કુટુંબીઓને તેમના જવાથી જે ખોટ પડી છે તે સહન કરવાની શક્તિ મળે એ જ ભગવાન સ્વામિનારાયણ, ગુરૂહરિ કાકાજી મહારાજ તથા સર્વે ગુણાતીત સ્વરૂપોને પ્રાર્થના.

સોમવાર, તા. ૨૯-૧૨-૨૦૨૫

પૂજ્ય હરખચંદભાઈના ૮૭મા પ્રાગટ્યપર્વે...

પૂજ્ય હરખચંદભાઈ શાહ!
ગુરુહરિ કાકાજી સાથે કરી સાચી પ્રેમસગાઈ,
કાકાજીએ એમના પ્રેમને જાણ્યો, માણ્યો, વખાણ્યો,
પિછાણી એમનું દિલ, એને વિશેષ પ્રમાણ્યો,
જે કંઈપણ લાવે, વાવે, આપે-કરે એ એવી રીતે કરે કે
સહુ કોઈ બોલી ઊઠે 'વાહ... વાહ!'

જેવો ઉજ્જવળ સુંદર ચહેરો, એવું જ નિર્મળ મન,
કોઈ આંગળી ચીંધી ના શકે, એવું ચારિત્ર્યમય જીવન,
સતત અને સરળ સરિતાસમ જીવનરીતિ,
સહુની સાથે રાખે કેવળ નિજાનંદી નિરપેક્ષ પ્રીતિ!

હરેક ક્રિયાને સેવા માનીને કરે,
હરેક સેવાને પૂજા માનીને કરે,
ઠાકોરજીને પ્રત્યક્ષ અને પ્રત્યક્ષ હોય એમાં ઠાકોરજી,
એવા ભાવથી જુએ કે જોવું એ દર્શન બને,
એમની આગળ બેસવું-ઊઠવું, હરવું-ફરવું,
એક દિવ્ય નર્તન બને!

ચોકસાઈ, ચીવટતા, સ્વચ્છતા,
સેવા કે પદાર્થમાં પૂર્ણતા અને ગુણવત્તા,
એવી રાખે અને રખાવે કે ઉત્કૃષ્ટતા સામેથી આવીને વરે!
ઠાકોરજીની કે ભક્તોની સેવામાં
ના કોઈ બાદબાકી કે ભાગાકાર,
હોય હંમેશાં એના સરવાળા અને ગુણાકાર!

ચ્હા એવી બનાવે અને વળી એવા ભાવથી બનાવે,
કે પૂજ્ય મલકાની સાહેબ જેવી
શ્રીમંત અને લબ્ધપ્રતિષ્ઠિત વ્યક્તિ પણ,
પંચતારક હૉટેલની ચ્હાને અવગણી,
એમની ચ્હા અને ચાહને માણવા,
તારદેવ મંદિરે ચાર-ચાર દાદરા ચઢીને આવે!

તારદેવ મંદિરે ઝાડું એવું વાળે કે પોતું કર્યું હોય એવું લાગે,
પોતું એવું કરે કે આપણું પ્રતિબિંબ એમાં દર્શાય,
અને પ્રતિબિંબમાં તેમનું હૈયું એવું પરખાય!

રસોઈમાં તો એવા પ્રવીણ કે ભલભલા રસોઈયા પણ,
એમની આગળ લાગે જાણે દીન,
પર્યાપ્ત હોય સામગ્રી, ન મસાલાઓથી ભરપૂર,
જે કોઈ એ આરોગે, એ થાય ભક્તિ-સ્વાદથી ચૂર!

બીમાર વ્યક્તિની સુશ્રુષા એવી સુંદર કરે કે
સ્વસ્થ વ્યક્તિ પણ એ દર્દીની છૂપી ઈર્ષ્યા કરે!
દર્દીને તનથી અને મનથી પ્રફુલ્લિત એવા રાખે કે
તેને પણ થાય ફરીથી ક્યારે આવાં ધન્ય ભાગ્ય જાગે!

પવઈ મંદિરે પોતાની રૂમ એવી રાખે કે
બ્રહ્મસ્વરૂપ હરિપ્રસાદસ્વામીજી જેવા પુરુષ પણ,
હિલ સ્ટેશનને છોડી એ રૂમને પસંદ કરે,
કારણ વ્યવસ્થા અને સુઘડતા સાથે
એમાં ભક્તિની મહેક પ્રસરે!

સૌથી વડીલ હોવા છતાં અદ્‌ભુત દાસત્વભાવે વર્તે,
કોઈપણ સેવા કાર્યમાં પોતાનો અભિપ્રાય જણાવે,
પણ એના અમલનો ક્યારેય હઠાગ્રહ ન રાખે,
પોતાના દેહ અને પ્રકૃતિ વિરુદ્ધ હોય તો પણ
બધું જ સહેજે ચલાવે!

ભલે રહ્યા છે પવઈમાં, અલખની બેઠક જમાવી,
ફેલાઈ છે ભક્તિની ફોરમ, દેશ-વિદેશમાં સારી,
સઘળાં વિચરણોમાં સંતભાઈઓને હોય
નિશ્ચિંતતા-નિરાંત કેવી?
જેવી હરખચંદભાઈની હાજરી હોય પવઈ મંદિરે એવી!

હે પૂજ્ય હરખચંદભાઈ!
સર્વે સ્વરૂપ-જ્યોતિર્ધરો અખંડ આપને સંભારે,
આપની હાજરી હોય અખંડ સહુનાં મન-મંદિરનાં દ્વારે,
આપના પ્રાગટ્યદિને યાચીએ આશિષ આપની કને,
તન-મનથી તાજા અને યુવાન,
આપની જેમ ભક્તિથી રહીએ અમે...

આપના જ પવઈ 'અક્ષરધામ' સ્વામિનારાયણ મંદિરના
સર્વે સંતભાઈઓ, સંતબહેનો તથા મુક્તસમાજના ભાવસભર
જય શ્રી સ્વામિનારાયણ.

RNI Regn No : MAHMUL/2015/62272
Date of publication: 8th of every month
POSTED AT MUMBAI PATRIKA CHANNEL SORTING OFFICE MUMBAI 400001

Postal Regn No: MCW/329/2018-20
Date of posting:11th of every month

Summary of Events

(1) Bhajan Sandhya on 7th December at Kalyan. (2) Social Activities in Karjat by Yogi Divine Society, Sadbhav Foundation and Rotary Club on 10th and 20th December. (3) Visit by P. Mayaben from Gunatit Jyot at "Akshardham" Temple, Powai on 15th December. (4) P.B. Vedkumariji and Faridah Madam, the Owner of Chrysaellect at "Akshardham" Temple, Powai for Project Discussion on 21st December. (6) P.P. Harakhchandbhai's 86th and Haribhai Saheb's Pragatya Din celebration at "Akshardham" Temple, Powai on 25th December. (7) P.P. Premswaroopswamiji's 81st Birthday Celebration at Chhanbhoi (Vadodara) on 27th December. (8) Sankarda Temple 7th Patotsav on 28th December. (9) Celebration of 224th "Swaminarayan Mahamantra Pradan Din" (Invocation Day) and welcome of New Year 2026 with a Special Fun Fair, Dhun and Blessings at "Akshardham" Temple, Powai on 31st December. (10) Akshardhamgaman of P.B. JayantiBen (Jasvantiben) on 7th December. (11) Article for P. Harkhchandbhai 86th Pragatya Din celebration on 29th December.

Space for address

Space for franking

Printed Matter - Book Post

From

YOGI DIVINE SOCIETY

6D Sonawala Building, Tardeo,
Mumbai - 400 007 Tel: 2380 2527

'Akshardham' Swaminarayan Temple,
Near Hiranandani Hospital, Powai, Mumbai - 400 076
Tel: 2578 2151/2579 4314 Email: isrc@kakaji.org

Printed & Published by Bharat P Mehta on behalf of Yogi Divine Society & Printed at Jalaram Enterprise, Fairy Manor, 13, Rustom Sidhwa Marg (Gunbow Street), Fort, Mumbai - 400 001 & Published by Yogi Divine Society, 6D, Sonavala Building, 4th Floor, Tardeo, Mumbai - 400 007.

Editor: Bharat P Mehta